# "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के सम्बंध में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन"

प्रताप कुमार सिकदार[1], प्रो0 कोमल यादव[2]

[1]शोधकर्ता, [2]शोध पर्यवेक्षक
[2]प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग
एन.आर.ई.सी. कॉलिज, खुर्जा (उ0प्र0)

**सार:-**
**शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न रहकर आज एक समग्र विकास की प्रक्रिया बन चुकी है, जिसमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक पक्षों की समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों में परंपरागत रूप से बुद्धिलब्धि, पारिवारिक पृष्ठभूमि, संसाधन, अध्यापक का योगदान आदि को प्रमुखता दी जाती रही है, किंतु हाल के वर्षों में मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों का ध्यान एक नवीन और अत्यंत प्रभावशाली तत्व की ओर गया है संवेगात्मक बुद्धिमत्ता यह अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि विद्यार्थियों की भावनात्मक जागरूकता, आत्मनियंत्रण, आत्मप्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल उनकी शैक्षणिक सफलता के निर्णायक घटक बन सकते हैं, विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर, जहाँ छात्र अपने जीवन के एक अत्यंत संवेदनशील और परिवर्तनशील चरण से गुजर रहे होते हैं। माध्यमिक शिक्षा स्तर वह अवस्था होती है जिसमें छात्र न केवल शैक्षणिक दृष्टिकोण से गंभीर प्रतिस्पर्धा का सामना करते हैं, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और व्यवहारिक रूप से भी अनेक परिवर्तन और संघर्षों से गुजरते हैं। इस काल में छात्रों की भावनाएँ तीव्र होती हैं, आत्म–सम्मान का विकास होता है, सामाजिक पहचान की खोज प्रारंभ होती है तथा पारिवारिक एवं शैक्षणिक दबाव का प्रभाव अत्यधिक होता है। इन परिस्थितियों में यदि विद्यार्थी भावनात्मक रूप से जागरूक और संतुलित नहीं होते, तो वे तनाव, कुंठा, चिंता एवं आत्म–विश्वास की कमी जैसी समस्याओं से ग्रसित हो सकते हैं, जो सीधे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित कर सकती है। अतः यह अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है कि किस प्रकार संवेगात्मक बुद्धिमत्ता माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता को आकार देने में सहायक हो सकती है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की विभिन्न उप–घटनाओं जैसे आत्म–चेतना, आत्म–नियंत्रण, प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कुशलता का विश्लेषण करते हुए यह जाना जा सके कि वे विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार, परीक्षा प्रदर्शन, सहपाठी संबंधों, आत्मविश्वास और समग्र शैक्षणिक प्रगति को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। इस शोध में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन का तुलनात्मक मूल्यांकन उनकी संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर के साथ किया जाएगा, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि उच्च या निम्न संवेगात्मक स्तर वाले विद्यार्थियों के बीच शैक्षणिक उपलब्धि में क्या अंतर पाया जाता है।**

**मुख्य शब्द :- माध्यमिक स्तर, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, शैक्षिक उपलब्धि**

**प्रस्तावना:-**
वर्तमान शैक्षणिक परिदृष्य में शिक्षा की परिभाषा केवल किताबी ज्ञान, परीक्षा परिणाम या बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह एक समग्र मानवीय प्रक्रिया बन चुकी है जिसमें व्यक्तित्व के सभी आयामों संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक, नैतिक तथा व्यवहारिक पक्षों का संतुलित विकास आवश्यक हो गया है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों का मत है कि किसी व्यक्ति की सफलता केवल उसके बौद्धिक गुणांक पर निर्भर नहीं करती, अपितु उसकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस परिप्रेक्ष्य में यह अत्यावश्यक हो जाता है कि हम विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को भी सम्मिलित कर मूल्यांकन करें, विशेषकर माध्यमिक स्तर पर, जो किसी भी छात्र के व्यक्तित्व निर्माण का आधार स्तंभ होता है। माध्यमिक शिक्षा एक ऐसा चरण होता है जहाँ विद्यार्थी बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर कदम रखता है, और यह अवस्था मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील मानी जाती है। इस अवस्था में विद्यार्थियों के भीतर न केवल शारीरिक और मानसिक परिवर्तन होते हैं, बल्कि वे सामाजिक पहचान, आत्म–स्वीकृति, आत्मनिर्भरता एवं आत्ममूल्यांकन की प्रक्रिया से भी गुजरते हैं। इस समय छात्र का भावनात्मक संसार अत्यंत सक्रिय रहता है, और उसके निर्णय, व्यवहार तथा संबंधों

पर उसका सीधा प्रभाव पड़ता है। यदि इस अवस्था में उनकी संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उचित रूप से विकास नहीं किया जाए, तो यह शैक्षणिक प्रदर्शन, आत्म–संयम, आत्म–विश्वास, सामाजिक सहभागिता और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता ळें

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता वह योग्यता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने और प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने में सक्षम होता है। इसे सरल शब्दों में 'भावनाओं की बुद्धिमत्ता' कहा जा सकता है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा को सर्वप्रथम 1990 के दशक में पीटर सैलोवे और जॉन मेयर ने प्रस्तुत किया था, किंतु इसे लोकप्रियता मिली डैनियल गोलमैन के कार्यों के कारण। गोलमैन ने अपने शोधों में यह स्पष्ट किया कि किसी छात्र की सफलता उसके शुद्ध बौद्धिक कौशल की तुलना में अधिकतर उसकी संवेगात्मक क्षमताओं पर निर्भर करती है जैसे आत्मप्रेरणा, सहानुभूति, आत्मनियंत्रण, सामाजिक कुशलता तथा पारस्परिक संबंधों का प्रबंधन। भारत जैसे विविध सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य वाले देश में, जहाँ विद्यार्थियों के जीवन पर पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षणिक दबाव निरंतर बढ़ते जा रहे हैं, वहाँ यह अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता किस सीमा तक उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करती है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी बोर्ड परीक्षा, प्रतिस्पर्धा, भविष्य के करियर विकल्पों और सामाजिक अपेक्षाओं के दबाव से गुजरते हैं। इस प्रकार की परिस्थितियों में यदि उनके भीतर भावनात्मक संतुलन नहीं है तो वे तनाव, चिंता, आत्मग्लानि, आत्म–विश्वास की कमी, हीन भावना और अकादमिक विफलता का सामना कर सकते हैं।

ऐसे में यह समझना आवश्यक है कि जो विद्यार्थी अपनी भावनाओं को पहचानने, उन्हें नियंत्रित करने, आंतरिक प्रेरणा को बनाए रखने, चुनौतियों का सामना धैर्यपूर्वक करने और दूसरों की भावनाओं को समझने में सक्षम होते हैं, वे कठिन परिस्थितियों में भी संतुलन बनाए रखते हैं और शैक्षणिक स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पाते हैं। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता उन्हें न केवल कक्षा–कक्ष में बेहतर संवाद स्थापित करने में सहायता करती है, बल्कि शिक्षक, अभिभावक एवं सहपाठियों के साथ स्वस्थ संबंधों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शोध यह सिद्ध कर चुके हैं कि जिन छात्रों में उच्च संवेगात्मक बुद्धिमत्ता होती है, वे अधिक अनुशासित, आत्म–प्रेरित, सकारात्मक सोच वाले, तनाव–सहिष्णु एवं समस्याओं के प्रति समाधानोन्मुखी दृष्टिकोण वाले होते हैं। ये गुण शैक्षणिक सफलता के मूल स्तंभ माने जाते हैं। इसके विपरीत, कम संवेगात्मक बुद्धिमत्ता वाले विद्यार्थी अपनी विफलताओं को व्यक्तिगत कमजोरी मानकर निराशा, कुंठा या आत्महत्या जैसे कदम भी उठा सकते हैं, जो आज के समय में एक गंभीर सामाजिक एवं शैक्षणिक चिंता का विषय बन गया है।

इसलिए यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में शैक्षणिक उपलब्धि का गहन अध्ययन किया जाए, ताकि यह समझा जा सके कि भावनात्मक दक्षता कैसे उनकी शैक्षणिक यात्रा को प्रभावित करती है। यह अध्ययन शिक्षाशास्त्र, बाल विकास, मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र के संगम पर आधारित है और यह शैक्षणिक अनुसंधान के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। इस अध्ययन के माध्यम से न केवल भावनात्मक रूप से सुदृढ़ विद्यार्थियों की पहचान की जा सकेगी, बल्कि उनके लिए उपयुक्त शिक्षण विधियाँ, परामर्श, सहायक वातावरण और नीतिगत हस्तक्षेप भी विकसित किए जा सकते हैं। इस अध्ययन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इससे शिक्षकों, विद्यालय प्रशासन और अभिभावकों को यह दृष्टिकोण प्राप्त होगा कि शैक्षणिक उपलब्धि के मापदंड केवल संज्ञानात्मक नहीं होते, बल्कि संवेगात्मक स्तर पर भी विद्यार्थियों को समझने की आवश्यकता है। यदि एक छात्र निरंतर कम अंक प्राप्त कर रहा है, तो इसके पीछे केवल उसकी अकादमिक योग्यता को दोष देना एक सीमित सोच होगी। उसके व्यवहार, परिवारिक परिस्थिति, आत्म–मूल्य, शिक्षक के साथ संबंध, या भावनात्मक संघर्ष को समझना आवश्यक है। आज की शिक्षा नीतियाँ, विशेषकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, संवेगात्मक विकास को महत्व देती हैं और विद्यार्थियों के समग्र विकास पर बल देती हैं। इसमें स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि विद्यार्थियों को केवल परीक्षाओं के लिए नहीं, बल्कि जीवन के लिए तैयार करना है। जीवन की इस तैयारी में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एक अपरिहार्य उपकरण है। यह केवल कक्षा की सीमाओं तक नहीं, बल्कि कार्यस्थल, परिवार, समाज और व्यक्तिगत जीवन में भी एक निर्णायक भूमिका निभाती है।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों को समझने की कुंजी प्रदान करता है। यह अध्ययन न केवल शिक्षाशास्त्र को एक नवीन दृष्टिकोण देता है, बल्कि शिक्षा प्रणाली को अधिक मानवीय, सहयोगी, प्रेरक और परिणामकारी बनाने में भी सहयोग करता है। यह शोध छात्रों के लिए आत्म–जागरूकता, आत्म–प्रेरणा और आत्म–विकास की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध हो सकता है।

**अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :-**

वर्तमान युग में शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रही है, बल्कि यह एक समग्र प्रक्रिया बन चुकी है जिसमें संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक तथा नैतिक पक्षों का विकास अनिवार्य है। ऐसे में "संवेगात्मक बुद्धिमत्ता" का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है, विशेषकर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संदर्भ में। माध्यमिक स्तर का शैक्षणिक चरण विद्यार्थी जीवन का एक संवेदनशील, संक्रमणकालीन एवं निर्णायक काल होता है, जिसमें न केवल उनकी शैक्षणिक योग्यता विकसित होती है, बल्कि उनका भावनात्मक संतुलन, आत्म–ज्ञान, आत्म–नियंत्रण, सहानुभूति और सामाजिक कौशल भी आकार लेते हैं। इस स्तर पर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक, सामाजिक व संवेगात्मक पक्षों की उपेक्षा करने से न केवल उनकी शैक्षणिक प्रगति प्रभावित होती है, बल्कि उनका संपूर्ण व्यक्तित्व विकास भी बाधित हो सकता है।

इस पृष्ठभूमि में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को शैक्षिक उपलब्धि के साथ जोड़कर देखना अत्यंत आवश्यक हो गया है। डैनियल गोलमैन जैसे विद्वानों ने यह सिद्ध किया है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता केवल व्यक्तिगत संबंधों और कार्यस्थलों पर ही नहीं, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी एक निर्णायक भूमिका निभाती है। किसी छात्र की शैक्षणिक उपलब्धि केवल उसके आईक्यू या परंपरागत बुद्धि पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह किस प्रकार से अपने भावनात्मक अनुभवों को नियंत्रित करता है, तनाव की स्थिति में कैसा व्यवहार करता है, अपने साथियों व शिक्षकों से कैसे संबंध बनाता है, आत्मप्रेरणा कितनी है तथा विफलताओं का सामना कैसे करता है।

माध्यमिक शिक्षा का स्तर वह कालखंड होता है जहाँ विद्यार्थी बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश करता है और उसके संवेग अत्यंत तीव्र तथा परिवर्तनशील होते हैं। इस अवस्था में यदि उनकी संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती, या वे भावनात्मक रूप से असंतुलित रहते हैं, तो उनकी एकाग्रता, रूचि, परिश्रम, निर्णय क्षमता और आत्मविश्वास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का विकास विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य हो गया है। इसके माध्यम से वे अपने अंदर उत्पन्न होने वाली भावनाओं को पहचान सकते हैं, उन्हें अभिव्यक्त कर सकते हैं और उचित रूप में नियंत्रित कर सकते हैं। यह भावनात्मक साक्षरता अंततः उनकी शैक्षिक उपलब्धियों में भी वृद्धि करती है। आज जब विद्यार्थी अनेक प्रकार के तनाव, प्रतियोगिता, पारिवारिक दबाव और सामाजिक अपेक्षाओं के बोझ से गुजर रहे हैं, तब उनके लिए भावनात्मक सुदृढ़ता एक आत्मिक कवच के रूप में कार्य करती है। ऐसे में शिक्षकों, अभिभावकों और नीति निर्धारकों के लिए यह अत्यावश्यक हो जाता है कि वे विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के विकास पर विशेष ध्यान दें। शिक्षा नीति 2020 में भी यह उल्लेख किया गया है कि विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु भावनात्मक एवं सामाजिक कौशलों का संवर्धन आवश्यक है। इससे स्पष्ट होता है कि केवल पाठ्यक्रम की पढ़ाई और परीक्षा में अंक लाने की प्रवृत्ति अब शिक्षा के उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर सकती। इसके लिए विद्यार्थियों को ऐसे वातावरण की आवश्यकता है जहाँ वे भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस करें और अपने भीतर के भावों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकें।

इस अध्ययन की आवश्यकता इसीलिए भी है क्योंकि यह माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले एक प्रमुख कारक की पहचान करता है, जिसे अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। अनेक शोध यह सिद्ध कर चुके हैं कि उच्च संवेगात्मक बुद्धिमत्ता वाले छात्र न केवल परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हैं, बल्कि वे समूह कार्यों में भी अधिक प्रभावी होते हैं, उनके आत्म–सम्मान का स्तर ऊँचा होता है, वे शिक्षक–अभिभावक–सहपाठी संबंधों में अधिक कुशल होते हैं तथा मानसिक तनाव का प्रभावी सामना कर पाते हैं। यदि इन कारकों की पहचान कर उनके विकास की दिशा में प्रयास किए जाएँ, तो शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता दोनों में वृद्धि संभव है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन सामाजिक स्तर पर भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे देश में ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में शैक्षणिक संसाधनों, पारिवारिक पृष्ठभूमियों और सामाजिक परिवेशों में व्यापक अंतर होता है। ऐसे में यह जानना आवश्यक है कि भिन्न–भिन्न सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में पले–बढ़े विद्यार्थी किस प्रकार से अपनी भावनाओं को नियंत्रित करते हैं और वह उनके शैक्षणिक प्रदर्शन पर क्या प्रभाव डालती हैं। इससे एक समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा नीति निर्माण में सहायता मिलेगी जो विविध पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का ध्यान रखे।

इसके अलावा, यह अध्ययन शिक्षकों के प्रशिक्षण के क्षेत्र में भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यदि शिक्षक यह समझ सकें कि किस प्रकार से विद्यार्थी की संवेगात्मक स्थिति उसकी पढ़ाई में बाधा डाल रही है, तो वे अधिक संवेदनशील, सहयोगी और प्रभावी शैक्षणिक रणनीतियाँ अपनाकर विद्यार्थियों की मदद कर सकते हैं। इससे कक्षा–कक्ष का वातावरण अधिक सकारात्मक होगा, अनुशासन संबंधी समस्याएँ कम होंगी और विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी में वृद्धि होगी। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययनष न केवल वर्तमान शैक्षणिक परिदृश्य की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है, बल्कि यह शिक्षा को भावनात्मक रूप से अधिक समावेशी,

मानवीय और प्रभावशाली बनाने की दिशा में एक सशक्त कदम भी है। इस अध्ययन के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि कैसे संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों के अकादमिक जीवन को संतुलित, प्रेरणादायी और सफलता से भरपूर बना सकती है। इस विषय पर गहराई से अध्ययन करने से न केवल शैक्षणिक परिणामों में सुधार होगा, बल्कि भावनात्मक रूप से सशक्त नागरिकों का निर्माण भी संभव होगा, जो सामाजिक समरसता, आत्म–नियंत्रण और निर्णय क्षमता से युक्त होंगे। अतः यह विषय शैक्षणिक अनुसंधान की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक, समसामयिक और सार्थक है।

**शोध समस्या कथन :- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्विमत्ता के सम्बंध में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन**

**संवेगात्मक बुद्धिमत्ता :-** जब व्यक्ति द्वारा अपने जीवन और परिस्थितियों को अपने नियंत्रण में रखने का प्रयास किया जाता है और वह सुख–दुख, भय–क्रोध, ईर्ष्या मोह आदि से प्रभावित नहीं होते वही व्यक्ति संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान कहलाता है। वर्तमान शताब्दी में सामाजिक एवं शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में बुद्धि की एक नई अवधारणा विकसित हुई है जो पुराने परम्परागत सिद्धांतों का स्थान ले रही है। इसे भावात्मक या संवेगात्मक बुद्धि कहा गया है। यह सामान्य बुद्धि से अधिक महत्वपूर्ण है।

**शैक्षिक उपलब्धि :-** शिक्षा के क्षेत्र में जो ज्ञान अर्जित किया जाता है उसे ही शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं। हर व्यक्ति जो शिक्षा से जुड़े रहते हैं अपनी शैक्षिक उपलब्धि को जानने की जिज्ञासा रखते हैं शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होने पर कार्य में गुणवत्ता की है तथा कार्य के प्रति उत्साह बढ़ता है। इसके विपरीत खराब शैक्षिक उपलब्धि होने पर व्यक्ति को कार्य के प्रति हतोत्साहित होना पड़ता है। विद्यालय में विद्यार्थी विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। कक्षा के सभी विद्यार्थियों का ज्ञान तथा ज्ञानार्जन करने की सीमा या प्रगति एक समान नहीं होती है। किसी कक्षा 7 विशेष में विद्यार्थियों ने इतनी मात्रा में ज्ञानार्जन या प्रगति की है उसका मूल्यांकन करना आवश्यक होता है। इसकी जांच जिस परीक्षण द्वारा की जाती है उसे ही उपलब्धि परीक्षा कहते हैं। विद्यार्थी का अंकपत्र ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रदर्शित करता है।

**शोध अध्ययन के उद्देश्य :-** प्रत्येक व्यक्ति जिस किसी कार्य को करता है उसका कुछ न कुछ उद्देश्य निहित होता है। उद्देश्य के बिना वह कुछ भी कार्य नहीं करता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन

**शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :-** प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोध अध्ययन को संपादित करने हेतु निम्न परिकल्पना का निर्माण किया गया –

1- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

**शोध अध्ययन विधि :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए "वर्णनात्मक अनुसंधान" की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित प्रतीत हौता है इसलिए शोधकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

**शोध अध्ययन की जनसंख्या :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन में बिजनौर शहर में अध्ययनरत विभिन्न बिजनौर में सम्मिलित होने वाले 400 विद्याथियों को शहर में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

**शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :-** प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता ने उद्देश्यों के अनुरूप उपकरणों की खोज की, अतः शोधकर्त्ता ने शोध पर्यवेक्षक एवं शोध क्षेत्र के अन्य अनुभवी विद्वानों से सम्पर्क किया तथा उनके परामर्श से मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया।

**अध्ययन का परिसीमांकन :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल बिजनौर शहर में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक ही सीमित है।

**आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित सीमायें निर्धारित हैं।

**परिकल्पना परिक्षण :-** 1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। इस सम्बन्ध में परिगणित मूल्यों को तालिका संख्या 1.0 में प्रस्तुत किया गया है -

तालिका संख्या **4.01**

| 1. क्या आप अपने को दुर्बल मन का व्यक्ति मानते हैं | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | आवृत्ति | प्रतिशत | वैध प्रतिशत | संचयी प्रतिशत |
| | सदैव | **100** | **25.0** | **25.0** | **25.0** |
| | कभी–कभी | **178** | **44.5** | **44.5** | **69.5** |
| | कभी नहीं | **122** | **30.5** | **30.5** | **100.0** |
| | कुल | **400** | **100.0** | **100.0** | |

ग्राफ संख्या **4.01**

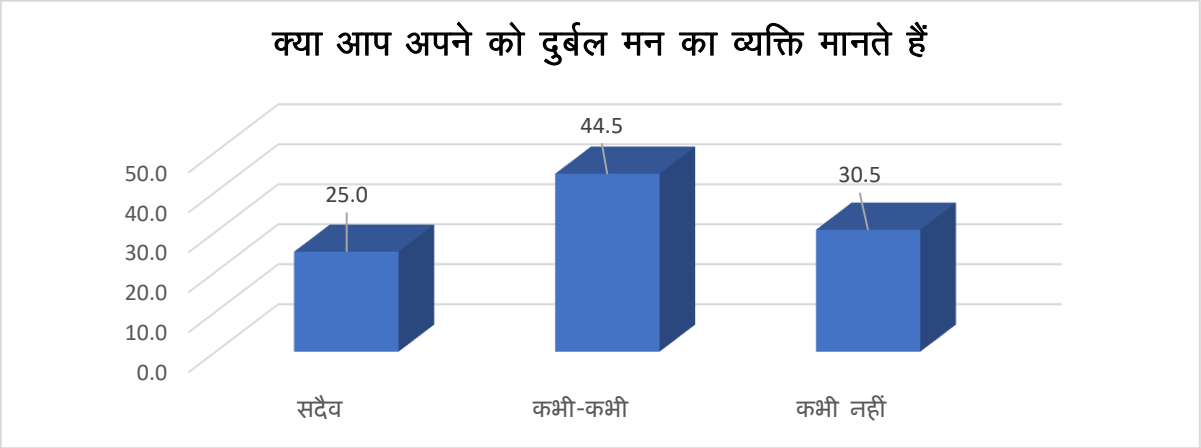


उपरोक्त तालिका के अनुसार, यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्यार्थियों ने स्वयं को दुर्बल मन का व्यक्ति मानने के प्रश्न पर **कभी–कभी** उत्तर दिया है, जिनकी संख्या 178 है जो कि कुल प्रतिभागियों का 44.5% है। यह संकेत करता है कि लगभग आधे विद्यार्थी समय–समय पर आत्मबल या मानसिक दृढ़ता की कमी अनुभव करते हैं। वहीं, 100 विद्यार्थी (25%) ने स्वयं को **सदैव** दुर्बल मन का व्यक्ति माना है, जो एक चिंताजनक संकेत है और मानसिक स्वास्थ्य या आत्मविश्वास से जुड़ी समस्याओं की ओर इंगित करता है। दूसरी ओर, 122 विद्यार्थियों (30.5%) ने स्पष्ट रूप से कहा कि वे **कभी नहीं** स्वयं को दुर्बल मन का व्यक्ति मानते, जो एक सकारात्मक संकेत है। संचयी प्रतिशत के अनुसार देखा जाए तो 69.5% विद्यार्थी किसी न किसी रूप में स्वयं को मानसिक रूप से दुर्बल अनुभव करते हैं, जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यार्थियों में मानसिक दृढ़ता के विकास की आवश्यकता है।

**आंकडों का विष्लेषण एवं व्याख्या :-**

**माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।**

तालिका संख्या **1.0**

| **स्रोत** | **वर्ग योग (SS)** | **स्वतंत्रता की डिग्री (df)** | **माध्य वर्ग (MS)** | **F मान (F)** | **p-मूल्य** |
|---|---|---|---|---|---|
| समूहों के बीच | **1020.7** | **2** | **510.35** | **7.25** | **0.001** |
| समूहों के अंदर | **27450.3** | **147** | **186.74** | | |
| कुल | **28471.0** | **149** | | | |

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के बीच समूहों के बीच F मान 7.25 है, जिसका च–मूल्य 0.001 है जो कि 0.05 के मानक स्तर से बहुत कम है। इसका अर्थ यह है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना जिसे यह कहता है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का शैक्षिक उपलब्धि

पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता, उसे अस्वीकार कर दिया जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता को प्रभावित करती है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–**


1. अरोड़ा, रीता (2005);''शिक्षा में नव चिन्तन'', जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।
2. अग्निहोत्री, रविन्द्र (2007);''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याऐं एवं समाधान'', जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. भट्टाचार्य, जी0सी0 (2005);''अध्यापक शिक्षा'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. दुबे, श्यामाचरण (2005);''भारतीय समाज'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–126।
5. लाल एवं पलोड़ (2007);''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'', मेरठः आर0लाल बुक डिपा।
6. प्रसाद, देवी (2001);''शिक्षा का वाहनः कला'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–68,।
7. पाण्डेय, राम शुक्ल (2007);''शैक्षिक नियोजन एवं वित्त प्रबन्धन'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ–105, 115, 116, 124।
8. शर्मा, रजनी एवं पाण्डेय, एस0पी0 (2005);''शिक्षा एवं भारतीय समाज'', तयपुरः शिक्षा प्रकाशन, पृष्ठ 128–129।
9. सुखिया, एस0पी0 (2005);''विद्यालय प्रशासन एवं संगठन'', मेरठः आर0लाल बुक डिपो।
10. अन्वेषिका, एन0सी0टी0ई0, नई दिल्ली।
11. ''भारत की जनसंख्या'', उपकार प्रकाशन, आगरा–2.
12. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, विद्या भारती, लखनऊ (उ0प्र0)
13. गिजुभाई बोधका –शिक्षक हों तो, पृ0 36
14. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, वार्षिक रिर्पोट नई दिल्ली– 1996–97
15. शिक्षा चिन्तन, त्रिमूर्ति संस्थान, कानपुर (उ0प्र0)
16. ''उत्तर–प्रदेश एक अध्ययन (शिक्षा के सन्दर्भ में) साहित्य भवन पब्लिकेशन्स'',आगरा–3.